੧ਓ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

क्रांतिकारी जगद् गुरू श्री ग्रंथ साहिब जी के सिद्धांतों

द्वारा

मोक्ष प्राप्ति करने के सहज व सरल विधि-विद्धांन

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नाम जपि निरमल करमु ॥

राग गउड़ी सुखमनी, म.5, पृष्ठ 266

यथा

कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥
बिन हरि भजन नही छुटकारा ॥

महला- 5, पृष्ठ 188

ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਕ

ਕ੍ਰਾਂਤਿਕਾਰੀ ਜਗਤ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਰ ਚੈਰਿਟੇਬਲ ਟਰਸਟ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ

ਲੇਖਕ: ਜਸਬੀਰ ਸਿੰਘ Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

Download Free

ਲੇਖਕ: ਜਸਬੀਰ ਸਿੰਘ

ਮਨੁੱਖੀ ਜੀਵਨ ਦਾ ਮੁਖ ਟੀਚਾ ਮੋਖ ਪ੍ਰਾਪਤੀ

ਭੂਮਿਕਾ

आध्यात्मिक दुनियां में मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति ही है। भावार्थ मनुष्य का आवागमन का चक्र कैसे समाप्त हो। जीवात्मा के लिए सब से बड़ा दु:ख बार-बार जन्म-मरण ही है। अब प्रश्न यह है कि इस लक्ष्य की प्राप्ति कैसे की जाएं। इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए कई पंथ आस्तित्व में आये जो बाद में अलग-अलग धर्मों के नाम से प्रसद्धि हुए परन्तु किसी ने भी अचूक लक्ष्य भेदने के सिद्धांत मानव समाज के सामने नहीं रखा। वास्तव में यह प्रश्न अपने-आप के बहुत जटिल है वहीं अलग-अलग विचार धाराओं के कारण उल्लजा हुआ भी है। बहुत से महापुरुषों ने सत्य की खोज को ही इस का समाधान बताया है सीधे-सीधे शब्दों में मनुष्य को प्रकृति के नियमों को खोजना है और उस का अनुसरण करना है। यह कार्य असम्भव तो नहीं परन्तु जन-साधारण के लिए कठिन जरूर है। इस कार्य की सिद्धि के लिए हम उन महापुरुषों के अनुभवों से लाभ उठाएंगे जिन्होंने सत्य की खोज की है और उस से समा गए है। वास्तव में महापुरुषों का जीवन वृतांत भी जन-साधारण के लिए एक आर्दश होता है, यदि उन के अनुभव जो उन्होंने मानव समाज को गद्य अथवा पद्य रूप में सचित कर के दिये है। जिसे हम संत वाणी कहते है वे हमारा सदैव मार्ग दर्शन करते रहते है। ऐसे ही पूर्ण सत्य पुरुषों की वाणी का एक संग्रह है श्री गुरू ग्रंथ साहिब जो कि श्री गुरू नानक देव जी के पांचवें उत्तराधिकारी श्री गुरू अरजन देव जी द्वारा 35 महापुरुषों की वाणी को संकलित करवाया है। इस ग्रंथ में महांपुरुषों को जो दिव्य ज्योति में अभेदता के पश्चात अनुभव ज्ञान हुआ उसी को स्वीकार गया है। जिन पुरुषों ने केवल अनुमान के आधार पर वाणि रची थी उन रचनाओं को नाकार दिया गया था। वास्तव में कुछ एक स्वार्थीयों ने समाज में अपने गलत अनुमानों के आधार पर बहुत सी भ्रातियां फैलाई और कर्मकाण्डों का जाल फैलायां जिस में साधारण नागरिक फंसते चले गये। इसी कारण वे लोग वास्तविकता से दूर होते गये और अपना लक्ष्य भी भूल गये है

अब हमारा एक छोटा सा प्रयास है कि उन 35 महापुरुषों की वाणी में से सिद्धांत चुन-चुन कर मानव समाज के समक्ष प्रस्तुत करें जो साधारण व्यक्ति को भी बिना कर्मकाण्ड, गृहस्थ आश्रम में रहते हुए मोक्ष प्रदान करा सकते है।

हमरी परम्परों में मृत्यु के पश्चात बहुत सी क्रियांए (कर्मकाण्ड) रूप में करते है। जन-साधारण का विश्वास है कि शव को तब तक मोक्ष प्राप्ति नहीं मिलाती जब तक उस की धार्मिक परम्पारों से अन्तेष्टी क्रिया न हो। वास्तव में यह सब बाते मिथ्या हैं इन में कोई तथ्य नहीं। शरीर मिट्‌टी से बना है इसने मिट्‌टी ने समा जाना है केवल आत्मा ही की गति होनी है। आत्मा तो उस शरीर को त्याग कर जा चुकी है। अब बताओं आप किस की गति

कर रहे है? इस विषय में गुरु वाक्य है -

जो मिरतक कउ चन्दनु चड़ावै ।। उस ते कहहु कवन फल पावै ।।

जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई।। तां मिरतक का किआ घटि जाई।।

महला 5, पृष्ठ 1160

खैर..... मैंने आपने मृत शरीर को एक मैडिकल संस्था (PGI) के दान देने के लिए उनके फॉर्म भर दिये है। मेरा मानना है कि मृत्यु एक अटल सच्चाई है यह घटना घटित होनी ही है। इसलिए मेरा शव यदि किसी काम आ सके तो इसमें भला ही है क्योंकि मैं जानता हूँ, मैं केवल शरीर नहीं, एक आत्मा हूँ। आत्मा अमर है उस का अवागमन चक्र चलता ही रहता है परन्तु पूर्ण गुरु (सत्यगुरु) द्वारा प्राप्त ज्ञान से इसी जीवन में डग-मगाना नहीं है हमें सत्य की खोज करनी है और कर्मकाण्डों के आडम्रों से बचना है।

हमलोग अज्ञानता बस मोह-माया का जाल अथवा बंधन नहीं तोड़ पाते हमारा मन परिवारिक मोह अथवा अपने ही शरीर का मोह भी हमारे रास्ते में रुकावटे उत्पन करता है।

आध्यात्मिक दुनियां में यह स्वीकारा गया है कि प्रभु में अभेद होने में मोह-माया की पकड़ भी बहुत बड़ी रुकावट होती है माया का तो बहुत विस्तृत स्वरूप है गुरुवाणी अनुसार वे सभी वस्तुएं माया है जो हमें प्रभु से दूर करती है।

एह माइआ जितु हरि विसरै, मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ।।

कहे नानक गुर परसादी, जिना, लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ।।

अनंद साहिब महला 3, पृष्ठ-917

माया-मोह के जाल को समझते के लिए मैं यहां एक लघु कथा दृष्टांत रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ-

एक साधक ने यह निर्णय लिया कि मैं जन्म-मरण के चक्रव्यूह को इस बार भेद कर रही रहूगां और मोक्ष प्राप्त कर प्रभु चरणों में समा जाने का प्रयास करुगां। सर्वश्रेष्ट लक्ष्य था अत: साधक ने विचार किया कि यदि मैं किसी निरजन स्थान पर साधना करू तो सम्भव है मोह-माया के बंधनों से मुक्ति मिल जाए और मेरी साधना फलीभूत हो जाए। इस प्रकार उस साधक ने एक जंगल में एक कुटियां बना ली और कंद-मूल फल खाकर लगा साधना करने।

एक दिन आस्मात उस की कुटियां के आगे से भागता हुआ हिरनों का झुंड निकला उन के पीछे शेर पड़ा हुआ था। हिरन तो निकल गये किन्तु उन का एक नवजात बच्चा भागता हुआ साधक की कुटिया में गुस गया। जब शेर ने देखा की मेरा शिकार जो पीछे छुट गया है वह कुटिया में है। जैसे ही शेर कुटियां की तरफ बढ़ा साधक ने

महिसूस किया कि यह नवजात शिशु मेरा शरणार्थी है अत: उसने डण्डा दिखा कर शेर को भगा दिया। अब समस्या यह खड़ी हो गई कि नवजात हिरन के शिशु को क्या खिलाया जाएं क्योंकि वह घास खाने योग्य न था, उस के लिए तो दूध चाहिए था। अत: साधक ने एक युक्ति निकाली। जब वह स्वयं के लिए कंद मूल फल की तलाश करता तभी नवजात हिरन के लिए कोमल-कोमल पत्तीयां बिनता रहता और उनको एक शिल्ला पर कूटकर चटनी बना कर उसे खिलाता। इस प्रकार हिरन और साधक में परस्पर प्रेम हो गया। धीरे-धीरे शिशु बड़ा होने लगा। किन्तु साधक को उन्हीं दिनों भगवान के दरबार से वापस लोटने का संदेश लेकर यमदूत आ गये और साधक को वापस चलने के लिए कहा-साधक वैसे तो जाने को तैयार था परन्तु उसके मन में आया कि मेरे पश्चात् इस नन्ने हिरन का क्या होगा। इस की देखभाल कौन करेंगा। इसे तो शेर खा जायेगा। जब साधक को बल पूर्वक धर्मराज के दरबार में पहुँचने गया तो धर्मराज ने कहा-मोह तो मोह ही है भले ही आपने हिरन के बच्चे से किया है। इस लिए यहां तुम्हें स्वीकार नहीं जा सकता। वापस जाओं और अपने आखरी संकल्प के अनुसार उनहिरनों के बच्चों का पालन पौषण करो। मोह की इन घटनाओं को देखकर गुरु वाणी का वाक्य है-

पंकजु मोह पगु नही चालै, हम देखा तह डूबीअले।।

आसा महला 1 : पृष्ठ-357

ੴ ਓਅੰਕਾਰ (ੴ) ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

गुरू वाक्य है: –

कई जनम भय कीट पतंगा ॥ कई जनम गज मीन कुरंगा ॥

कई जनम पंखी सरप होयओ ॥ कई जनम हैवर बिरव जोयओ ॥

मिल जगदीश मिलन की बरीआ ॥ चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥

राग गउड़ी महला 5, पृष्ठ 176

साहिब जी गुरु ग्रंथ जी के स्वीधान अनुसार जीव आत्मा को अन्नत जन्मों के पश्चात प्रभु कृपा दृष्टि द्वारा उचिर्ण होने पर मानव शरीर मिलता है उसे कुछ श्वासों की पुंजी दी जाती है। इस श्वासों की पुंजी द्वारा उसे सफल जीवन जीना होता है। अर्थात इस मानव समाज में प्रत्येक कर्म करते समय उस प्रभु को प्रसन्न करने की चेष्ठा करते रहना चाहिए अथवा उसे प्रत्येक क्षण अपने संग महिसुस करते रहना चाहिए। जिस से हमारे श्वासों की पूंजी व्यर्थ के कार्यो में नष्ट न हो जाये। हमारा प्रत्येक श्वास अर्थात क्षण अमूल्य है जिस का हमें दूरोपयोग न कर के सदोपयोग करना चाहिए।

परन्तु हम भूल जाते है कि यह विश्व कर्म भूमि है हम जो बीजे या बोयगे वही काटेगे। इस बात को गीता में भी विशेष रूप में कहा गया है –

जैसे कर्म करेंगा! वैसा फल देगा भगवान ॥

यही है भगवत गीता का तत्व ज्ञान ॥

यथा भगवत गीता

करि अनरथ दरबु संचिआ सो करजि केतु ॥

जैसा बीजै सो लुणै करम इहु खेतु ॥

जैतसरी महला 5 वार सलोका नाल पृष्ठ 706

बात स्पष्ट है कि हमारे कर्मो का लेखा – झोखा होना ही है हमारे पास श्वासों की पूंजी भी सिमत है अर्थात मृत्यु निश्चित ही होनी है उसे कोई भी टाल नहीं सकता, इसलिए इस मात लोक को मृत्यु लोक भी कहते है। प्राचीन काल में इस बात को जन – साधारण को समझने के लिए महापुरुषों ने एक विधि बना रखी थी कि एक धर्म राज है और एक जम राज है जो जीव आत्मा को उसका लेखा झोखा करने के ले जाते हैं वहां पर एक चित्र गुप्त

नाम का मंत्री है जो अपना बही-खाता खोल कर जीवात्मा का हिसाब करता है फिर उसे फल भोगने के लिए फिर से मृत्यु लोक में नया जन्म देकर भेज देता है। भले ही यह बात सत्य पर आधारित थी परन्तु समझाने की विधि अलफ-लेला की कहानियों जैसे लगती थी। जिस कारण नवयुवक तथा वैज्ञानिक इस बातों का परिहास करते थे और धार्मिक प्रथाओं को दकिया नूसी विचारधारा कहते थे। ठीक इसी प्रकार कम्युनिष्ट ईश्वर के अस्तित्व को मानने से भी इनकारी थे। इसलिए नास्तिकता का कई देशों में बहुत बोल-बाला था। होता भी क्यों न जो लोग धर्मकर्मों की आस्था से जुड़े होते थे। वे लोग ईश्वर के अस्तित्व होने का कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करने में अपने को अस्मर्थ पाते थे, उनका केवल यही कहना होता था कि ईश्वर एक शक्ति है कोई व्यक्ति नहीं । अत: उसके के अस्तित्व को कण-कण में महिसुस किया जा सकता है। प्रमाण के लिए हमारे शरीर की रचना ही उस प्रभु की अद्भभुत कला है इत्यादि। परन्तु आज हमें विज्ञान ने इलैक्ट्रोनिक यन्त्रों द्वारा एक साधन उपलब्ध किया है जिस द्वारा इसी प्रसंग को सहज-सरल विधि द्वारा समझा जा सकता है। जैसे मोबाईल फोन का ठीक नम्बर डायल करने मात्र से हम दुनियां के किसी कौने में भी उस क्षण बात कर सकते हैं, उसी प्रकार धर्मराज के दूत हमें क्षण भर में ढूंढ निकाल सकते हैं। हमारा मस्तिष एक प्रकृति द्वारा बनाया गया कम्पयूटर है जो सदैव चलाए मान रहता है प्रकृति ने इस में ऑडियों व वीडीओं फिल्म बनाने की प्रतिक्रिया चलाए मान रखी है जैसे *CCTV* कैमरे में यह सुविधा उपलब्ध रहती है। शायद इसीलिए धार्मिक दुनियां में कहा जाता कि भगवान के घर का न्याये सत्य पर ही आधारित होता है, क्योंकि वहां झूठ की कोई सम्भावना नहीं रहती क्यों कि हमारे मस्तिष की तारे हमारे हृदय के विचारों से सदैव जुड़ी हुई होती है। वहां हिसाब-किताब करने के लिए वर्षों की आवश्यकता नहीं होती। बस यूँ समझलों जैसे कलकुलेटर का बराबर का बटन दबाते ही हमारे सामने *(रिज़ल्ट)* परिणाम मिल जाता है, ठीक ऐसे ही प्रत्येक प्राणी अर्थात जीवात्मा के कर्मो का परिणाम के अनुसार उसे पुन: नव शरीर धारण करना पड़ता है। यह क्रम नियन्तर चलता ही रहता है, जब तक उस जीवात्मा का लेन देन की प्रतिक्रिया बनी रहती है। जब जीवात्मा अथवा मानव अपने कर्मो को प्रभु के विधि-विद्धान के अनुकुल नहीं करता अर्थात अपना बैलेन्स ***Balance*** शून्य नहीं करता।

प्रभु चरणों में अभेद आवस्था प्राप्त कैसे हो? इस विषय में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की वाणि ने हमारा बार-2 पथ प्रदर्शीत किया है जैसे-

विणु तुध होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख।।

देहि नामु संतोखीआ, उतरै मन की भुख।।

वार राम कली महला -5,पृष्ठ 958

राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ।।

ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा, मोहि ठाकुर ही दरसारे ।।

राग देवगंधारी महला 5 पृष्ठ 524

इस दुविधा को कारण कुछ पाखण्डियों ने अपनी जीवका के साधन रूप में धर्म-कर्म का जन-साधारण के समक्ष अंध विश्वास के रूप में विकसित किया और जन-साधारण को गुमराह कर के कर्म काण्ड के झूठे जंजाल में फसा कर अपना उल्लू सीधा किया। जिस कारण जन समूह भटक गया और पथ भ्रष्ट होकर कई समुहों में विभाजित हो गया। इस प्रकार एक-दूसरे के पंथो की निन्दा करने लगे जब कि सभी जानते थे कि 'परम पिता परमेश्वर' एक ही है और वह सर्वव्यापक अथवा सर्वत्र विद्यमान है भावार्थ रोम-रोम में रमे राम को न पहिचान के आपस में मतभेदों में ही उल्लजकर अपने समय और धन को व्यर्थ नष्ट करते रहे। यह कार्य केवल कम पढ़े लिखे ही नहीं करते बल्कि उच्च शिक्षा प्राप्त भी बिना विवेक के किये चले जाते है। सत्य तो यह है समस्त मानव जाती का धर्म एक ही है। वह है सत्य पर अधारित उज्जवल जीवन जीना। जिस क्रिया से हृदय में प्रसंनता उत्पन हो और मन शांत होता चला जाये। इस लिए प्रभु का एक प्राय:वाची शब्द है सच्चीदानंद अर्थात सत्य+चित+आनंद जिन कार्यो को हम धर्म-कर्म की संज्ञा देती है, वह केवल रास्ते भर ही है जिन्हे हम पंथ कह सकते है यह विभित्र कार्य अथवा पद्धातियां प्रभु के निकट भी ले आती है और बहुत से लोग उस प्रभु में अभेद होते पाये भी गये है, परन्तु यह सब कार्य हृदय से किये गये हो तो, जग दिखावा अथवा पाखाण्ड न हो।

परन्तु हमें बहुत दुख से कहना पड़ता है कि अधिकांश लोग स्वार्थी, धर्म के ठेकेदारों द्वारा भ्रमित किये जा रहे होते है, वे लोग उन क्रियाओं को धर्म कर्म बताते है जिन कार्यो के करने से उन लोगों की जीवका बनी रहती है और जिज्ञासु भटकते चले जाते है। विचलित हुए लोग जो भी धर्म के नाम से काम करते है, वास्तव में उन क्रियाओं में लेश मात्र भी प्रभु से मिलन अथवा उस की निकटता मिलने की सम्भावन नहीं होती। ये सभी पाखण्डियों द्वारा बताए गये फोकट कर्म होते है। जिसका जीव आत्मा को कोई लाभ नहीं होता-हां यह केवल जग दिखावा अथवा पाखण्डियों की पेट पूजा अवश्य ही पूरी होती रहती है।

यह तो सत्य है सभी पंथ (रास्ते) प्रभु चरणों में अभेद कर सकने की क्षमता रखते है। कोई भी गलत नहीं परन्तु बुद्धिजीवियों ने यह पहिचानना है कि कौन सा पंथ सरल व सहज है जो कम परिश्रम तथा कम से कम समय में हमारे श्वासों की पूंजी को सफल कर सकता है।

इस बात को समझने के लिए यहां एक उदाहरण दिया जा रहा है -मान लो मुझे हज अथवा (तीर्थ यात्रा 'चार धाम') करने जाना है। हज यात्रा के लिए कई रास्ते है। प्राचीन काल में लोग इरान-इराक होते हुए साउदी अरब होते हुए काबा पहुंचते थे, आजकल मुम्बई से समुद्री जहाज द्वारा जद्दा बंदरगाह पर पहुंचा जाता है वहां से मक्का नगर निकट ही है। तीसरा रास्ता है दिल्ली हवाई अड्डे, से सीधे मक्का नगर पहुँचे। अब आप ही विचार करे कम परिश्रम में और शीघ्र यात्रा किसने की? स्पष्ट है हवाई मार्ग ही सुगम था परन्तु इस में धन बहुत चाहिए था जो सभी के सब की बात नहीं- - - - - - - !!

ठीक इसी प्रकार लोग राम-नाम रूपी धन अर्जित करना नहीं चाहते केवल कर्म-काण्डों से प्रभु प्राप्ति की कमना करते है जो कि बहुत लम्बा मार्ग हैं इस विधि द्वारा प्रभु प्राप्ति असम्भव तो नहीं परन्तु कई जन्म लग सकते हैं।

आध्यात्मिक दुनियां में बार-बार का जन्म मरण ही सब से बड़ा दुख माना जाता है। इसी कष्ट से जीव आत्मा छुट्टकारा प्राप्त करना चाहती है जो कि केवल कर्म काण्डों से प्राप्त नहीं होता। केवल राम-नाम के भजन से प्राप्त होने वाली अवस्था को हम निगुणे कर्मो से जब प्राप्तियों की इच्छा रखते है अथवा स्वार्थी तथाकथित संतों द्वारा पथ भ्रष्ट करने का उनको शुभ अवसर मिल जाता एक तो वे लोग हमारा शोषण करते ही है दूसरा हमें गुमराह करके हमारा मानव जन्म निष्फल कर देते है क्यों कि गुरुवाणी के कथन अनुसार- - - -।

केते गुर चेले फुनि हूआ ।। काचे गुर ते मुकति न हूआ।।

रामकली महला 2 दखणी ओंकारु पृष्ठ 932

अर्थात आवागन बना ही रहता है क्यों कि अधूरा गुरू जो स्वयं मोक्ष को प्राप्त नहीं हुआ। उस द्वारा दी गई दीक्षा से हमें भी मोक्ष नहीं मिलने वाला। वह इस लिए कि वह कच्चा गुरु स्वयं तृष्णा तथा अंकार रूपी अग्नि में जल रहे है।

यह बात सर्वमान्य सत्य है कि पूर्ण सत्यगुरु की दीक्षा बिना किसी भी जीव आत्मा को प्रकृति मोक्ष प्रदान नहीं करती । अत: हमें सर्व प्रथम पूर्ण गुरू की परीभाषा का ज्ञान होना अति अवश्यक हैं। यदि कोई व्यक्ति बिना गुरू धारण किये हरि भजन करता है अथवा चिंतन -मनन से लीन रहता है तो भी उस की भक्ति फलीभूत नहीं होती। ऐसा नहीं है कि उस का नाम अभ्यास व्यर्थ चला गया परन्तु उसे परम पद् प्राप्त नहीं होता। उसका तब भी आवागम बना ही रहता है। अत: अब हमें गुरु ग्रंथ जी के उपदेश अनुसार पूर्ण गुरू की परिभाषा को जानना अति अवश्यक है-

सति पुरखु जिनि जानिआ, सतिगुरु तिस का नाउ ।।

तिस कै संगि सिखु उधरै, नानक हरि गुन गाउ ।।

राग गउड़ी सुखमनी महला 5 पृष्ठ-286

जैसे कि हम जानते ही है भगत कबीर जी को भी गुरु धारण करना ही पड़ा था। यह बात वह भी जानते थे कि गुरू दीक्षा बिना भजन फलभूत नहीं होता। ठीक है उनदिनों किसी व्यक्ति विशेष को गुरू धारण करना अनिवार्य था। परन्तु समय बदले के साथ सत्गुरू किसे धारण करें यह समस्या भंयकर रूप धारण कर गई क्योंकि अधिकांश लोग भगवी वेष-भूषा में बानारस के ठग ही हुआ करते थे। अत: समाज का इन लोगों से विश्वास उठ गया। इतिहास गवाह है तीसरे गुरूजी श्री अमर दास साहिब जब युवा थे तो वह पूर्ण गुरू धारण की अभिलाषा लिए हुए 20 वर्षो तक हरिद्वार, ऋषिकेश इत्यादि तीर्थो पर गुरू की खोज में भटकते रहे परन्तु उनकी कसोटी पर कोई संन्यासी अथवा डेरावादी खरा नहीं उत्तरा क्योंकि उनकी पैनी दृष्टि इन लोगों की त्रूटियों को भाप जाती थी। अत: वह लोट आते थे। परन्तु उन्हें विश्वास था कि मेरा परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगे। एक बार तीर्थ यात्र से लोटते समय एक संन्यासी

ने उन्हें व्यंग किया कि तुम तो निगुरे व्यक्ति हो अतः तुम्हारा जप+तप सब व्यर्थ है। यह व्यंग बाण उनके हृदय को भेद गया तब उन्होंने प्रभु चरणों में एकागर होकर प्रार्थना की कि हे प्रभों मेरी भेंट किसी पूर्ण पुरुष से करवाओं जिसे में मैं सत्यगुरु के दर्शन कर सकू। बस फिर क्या था उनकी प्रार्थना स्वीकार हुई और उनकी भेट गुरुनानक देव जी की वाणी द्वारा उनके उत्तराधिकारी गुरु अगंद देव से हो गई। वह उन की कसोटी पर खरे उत्तरे तब वह गद-गद हो गये और उन्हीं के चरणों में रह कर सेवा स्मरण द्वारा अपने श्वासों की पूंजी को सफल करने लगे।

मति को भरमि भुलै संसारि।। गुर बिनु कोय न उतरसि पारि।।

राग गोंड महला 5, पृष्ठ 864

उपरोक्त पंक्ति के भावार्थ है-ऐसा पुरुष जो सत्य+चित+आनंद में अपने चिंतन-मनन द्वारा अभेद हो गया हो। उसी पुरुष को सतिगुरू मानकर उसी से गुरु दीक्षा लेकर, उनके द्वारा बताए गई शिक्षा पर आचरण करके इसी जीवन में इसी शरीर में मोक्ष प्राप्त कर प्रभु में समां सकते है। वास्तव में मृत्यु के पश्चात किसी को भी मोक्ष प्राप्ति नहीं होती जो प्राप्त होना है, इसी शरीर में इसी संसार में सभी समाजिक कार्य करते हुए और गृहस्थ आश्रम में सभी कर्त्तव्य पालन करते हुए हो जाता है।

इस बात को समझने के लिए हमें साधारण विद्यार्थीयों को देखना है मान लो कोई भी विद्यार्थी मैट्रिक की शिक्षा में उचिर्ण होना चाहता है तो वह विद्यार्थी उसी कक्षा में रहते हुए परीक्षा देकर उचिर्ण होने का प्रमाण पत्र प्राप्त कर, आगे की शिक्षा के लिए किसी अन्य कॉलेज में जाता है उस से पहले उस के लिए सभी रास्ते बन्द हैं। ठीक इस प्रकार समस्त जीवात्माओं को इसी शरीर में रह कर मात लोक की परीक्षा पास करनी होती है नहीं तो बार-बार फेल (असफल) होने पर पुनः-पुनः जन्म लेना पड़ता रहता है।

अब फिर वही प्रश्न हमारे सामने है आध्यात्मिक दुनियां में गुरू किसे धारण करें तथा यह कैसे निश्चित करें कि अमुक-अमुक पुरुष पूर्ण सत्गुरू है अथवा हमारे पास कौन सी कसोटी है जिस से पूर्ण पुरुष का हमें ज्ञान हो?

इस कठिन समस्या का गुरू नानक देव जी तथा उनके उत्तराधिकारीओं ने समाधान निकाल कर मानव समाज के सामने रखा है। जब गुरूदेव प्रचार दौरे पर थे तो उनकी सिद्ध-योगीओं से भेट हुई। योगियों का गुरूदेव पर प्रश्न था कि आप का गुरू कौन है? उत्तर में गुरूजी ने उन्हें बताया कि मेरा कोई व्यक्ति विशेष गुरू नहीं जिस का मैं आप को नाम बताऊ। मेरा गुरू वह 'परम पिता परमेश्वर ही है' जिस का नांद मैं प्रति क्षण सुनता हूँ। भावार्थ मेरा शब्द गुरू है जो मेरी सुरति में धुनि रूप में समाई रहती है। इस पर सिद्ध योगियों ने हठ किया कि आप इस बात का हमारे समक्ष विस्तार रूप में वर्णन करें।

गुरुदेव उच्चारण किया :-

पवन अरंभु सतिगुर मति वेला ।। सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ।।

राग रामकली पृष्ठ 943

जब सर्वशक्ति मान (सचिदानंद) ने सृष्टि की रचना की तब उसने सर्व प्रथम पवन उत्पन की फिर उस सत्य गुरु ने मेरी मति में उस शब्द नाद की धवनि मेरी सुरति में एक धुनि रूप में गुंजा दी है। बस यही मेरा गुरू पिता है। इस बात को दसवें गुरू श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी ने अपने जीवन के अन्तिम समय में व्यवहारिक रूप दिया। उन्होंने किसी व्यक्ति विशेष को अपना उत्तराधिकारी न बना कर केवल शब्द गुरू को समस्त जगद् का गुरू बता कर आदि ग्रंथ साहिब (पोथी साहब) जी को नियमानुसार उपचारिकता पूर्ण करते हुए तिलक लगा कर (शीश) मस्तिक झूका कर दसों गुरू की ज्योति की संज्ञा दी और आदेश किया कि आयंदा समस्त सिक्ख जगद् गुरू दीक्षा पांच प्यारों से ग्रंथ साहब की उपस्थिती में लेंगे और सदैव श्री गुरू ग्रंथ साहिब को ही अपना 'शब्द' गुरू के रूप में गुरू धारण करेंगे। क्यों कि किसी भी मानव में त्रुटियां सदैव बनी रहती है अत: पांच प्यारे वे व्यक्ति होते है जो गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी अर्थात 'रहित मर्यादा' (आचार सहिंता) पर जीवन व्यापन करते है। नोट – ये लोग भी केवल जब विशेष वर्दी (वेष – भूषा) धारण कर के एकत्र हो तब ग्रंथ साहिब की छत्र – छाया में अमृत अभिलाषीओं को चार शपतें दिलवाते है तथा पांच ककारी वर्दी धारण कर (न्यारे बाणा) मर्यादित कर सदैव जीवन व्यापन करने की युक्ति बताते है। तब पांच प्यारे स्पष्ट रूप में बताते है श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी ही सिक्खी धारण करने का स्वीधान है यही बाणी हमारा कल्याण करेंगी। इस वाणी का सभी सिक्खों ने आदि से अन्त तक अध्ययन करना है। क्योंकि इस ग्रंथ में 35 महापुरुषों का वाणी है जो कि पारब्रह्म परमेशवर में उसी जन्म में अभेद हो गये थे अर्थात आवागम से मुक्त (मोक्ष प्राप्त) कर लिया था।

इस बात को समझने के लिए हम दो नारियल लेंगे एक कच्चा और एक पक्का हुआ। दोनों को क्रमंश: तोड़ेगे। कच्चे नारियल की गिरी तोड़ते समय टूट जायेगी जब कि पक्का नारियल तोड़ने पर खोल से सम्पूर्ण साबुत बार आ जायेगा। ठीक इसी प्रकार पूर्ण सत्य गुरू धारण करने वाले व्यक्ति गुरू मर्यादा अनुसार जीवन व्यापन करने हुए परिपक्व होकर इसी जीवन में इस शरीर रूप खोल को छोड़कर मोह – माया के जाल के बन्दनों से ऊपर उठ कर जीवन मुक्त हो चुके होते है। उन्हें जीवन मुक्त कहते है ।

हरखु सोगु जाकै नहीं, बैरी मीत सभानि।।

कहु नानक सुनि रे मना, मुकति ताहि तै जानि ।।15।।

सलोक महला 9 पृष्ठ 1427

यथा

प्रभ की आगिआ आतम हितावै।। जीवन मुकति सोऊ कहावै।।

गउड़ी सुखमनी महला 5, पृष्ठ

यथा

ओहु धनवंत कुलवंतु पतिवंतु।। जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंत।।

गउड़ी सुखमनी महला 5, पृष्ठ

यथा

श्रमु थाका पाए विस्रामा, मिटि गई सगली धाई।।

अब मोहि जीवन पदवी पाई ।।

मारू महला 5, पृष्ठ 1000

यथा

इहु जगतु ममता मुआ, जीवण की विधि नाहि।।

गुरु कै भाणै जो चलै, ता जीवण पदवी पाहि।।

महला 3 वार गूजरी 1 पृष्ठ

यथा

जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ।।

जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ।।

मारू महला 1, असटपदी पृष्ठ 1009

यथा

जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ।।

जीवन मुकति से आखीऐ, मरि जीवै मरीआ।।

जन नानक सतिगुर मेलि हरि जगु दुतर तरीआ।।

आसा महला 4 पृष्ठ 449

एक बार मेरे गहरें मित्र ने मुझे से प्रश्न किया कि मेरी माता बहुत उज्जवल जीवन जाती थी। वह प्रत्येक क्षण प्रभु चरणों का ध्यान कर चिंतन-मनन में ही व्यतीत करती थी। पिछले कुछ दिनों में वह बिमार रहने लगी थी फिर उनका अन्तिम समय आ गया परन्तु उन्हें प्राण त्यागने में बहुत कष्ट झेलना पड़ा।

उत्तर सीधा सादा है-श्वासों की पूंजी समाप्त होने पर वापस लोटना ही था। जब प्रभु की ओर से वापस लोटने का संदेश दिया गया तो वह लोटने को तैयार नहीं थी क्यों कि उन की इच्छाएं बाकी थी कि मैं अपने छोटे पुत्र का विवाह इत्यादि देखकर जाऊगी। इस पर प्रभु के दूत उन को बल पूर्वक ले गये, वास्तव में वह शरीर त्यागना नहीं चाहती थी। यह संघर्ष ही उन के दुख का कारण बना है।

इस विषय में श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भगत त्रिलोचन जी की रचनाएं यहाँ उल्लेखनीय रहेगी।

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै।।

सरप जोनि वलि-वलि अउतरै।।

अरी बाई गोबिंद नामु मति बीसरै ।। रहाउ।।

अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जो मरै।।

बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै।।

अंति कालि जो लड़िके सिमरै।।

ऐसी चिंता महि जे मरै।।

सूकर जोनि वलि वलि अउतरै।।

अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै।।

प्रेत जोनि वलि-वलि अउतरै।।

अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै।।

बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतंबरु वा के रिदै बसै।।

।। 5।।2।। पृष्ठ 526

सभी जीवात्माओं को ध्यान रखना चाहिए कि हमारे श्वासों की पूंजी समाप्त होने से पहले हमें सभी इच्छा समाप्त कर देनी चाहिए अथवा त्याग देनी चाहिए। त्यागने में ही प्रभु मिलन है नहीं तो उस इच्छा पूर्ण करने के लिए बार-बार जन्म लेना ही पड़ता है अत: प्रत्येक जीवात्मा को ज्ञान होना चाहिए शरीर छुटने से पहले अपने मन से प्रभु चरणों में विश्राम करवाने के लिए प्रार्थना प्रारम्भ कर देने चाहिए कि प्रभु जी इस बार इस जीवात्मा को क्षमा प्रदान करें और मेरी भटकती हुई रूह को अपने चरणों में निवास बख्शें।

कहै कबीर सुनहु रे संतहु, खेत ही करहु निबेरा।।

अब की बार बखसि बंदे काउ बहुरि न भउजलि फेरा।।

रागु मारू, बाणी कबीर जीउ की, पृष्ठ 1104

इस बात को हम पुन: एक बार फिर से समझेगे। मान लो कोई सैनिक अपनी नौकरी पूर्ण कर घर लोटने लगता है तब उसे अपने पास के समस्त स्टोर अथवा इक्यूपमैटस जमा करवा कर कलेरैन्स सर्टीफिकेट लेना अनिवार्य होता है इस के अतिरिक्त उन सभी मित्रों से प्रसन्ता पूर्वक विदायगी लेनी होती है क्यों कि वह अपने घर लोट रहा है यही बात उसके मित्र भी करते है भले ही उन्हें बिछड़ने का दुख होता है परन्तु वे जानते है इसी प्रकार एक दिन हमें भी अपनी युनिट से विदा होकर अपने निज़ी घर वापस लोटना ही है। मान लो कोई इस विधि - विधान बने हुए को न मानकर सरकारी समाग्री वापस जमा न करवाए अथवा वापस लोटना न चाहे तो सोचो उस के साथ क्या व्यवहार होगा?

हम इसी विचार को दोबारा समझने का प्रयास करते है - मान लो कई व्यक्ति किसी होटल को एक निश्चित समय के लिए बुक करवाए। समय समाप्त होने पर खाली न करे तथा उन वस्तुओं को अपना बताए जो उसने बुकिंग के दिनों प्रयोग की थी तब उसके साथ होटल वालों का क्या व्यवहार होगा आप स्वयं विचार कर सकते है? ऐसा ही एक अन्य उदाहरण आप के समक्ष रखता हूँ। मानलो एक यात्री की रेल में सीट बुक है परन्तु गाड़ी ने ओर आगे यात्रा करनी है। जब यात्री का गतव्य स्टेशन आ गया तो उसे उतरना ही होगा। क्यों कि वही सीट टी. टी. ने किसी अन्य सवारी को देनी ही हैं। मान लो पहला यात्री वह सीट न छोड़े और कहे कि यह सीट मेरी बुक है तो टी. टी. या वह यात्री जिसे वह सीट पुन: बुक हुई है पहले यात्री से क्या व्यवहार करेगा अनुमान लगा लो।

कहने का तात्पर्य यही है कि हमें अपने श्वासों की पूंजी समाप्त होने से पहले वापस लोटने की तैयारी कर लेनी चाहिए थी यदि हम ऐसा करने में सफल होते है तो हमें शरीर त्यागते समय कोई कष्ट नहीं होगा।

1. जो जीवात्मा पुन: पुन: जन्म - मरण के चक्रव्यूह से छुटकारा प्राप्त करना चाहती है वह सर्व प्रथम अपने लिए लक्ष्य निर्धारित करती है कि मैंने प्रभु से सांसारिक वस्तुओं की कामना नहीं करनी केवल और केवल आवागमन से छुटकारा प्राप्त करने की बार - बार प्रार्थना करनी है। यह क्रिया हमारा सर्वप्रथम प्रयास होगा।

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे।।

कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भयओ दरसन देखे।।

धनासरी भगत रवि दास जी की, पृष्ठ 694

यथा

चरन–सरन गुरू एक पैंडा जाइ चल ।।

सतिगुरू कोटि पैंडा आगै होइ लेत है।।

कबित गुरदास जी

2. जीव - आत्मा को इस कार्य की सफलता के लिए किसी पूर्ण गुरू (सत्य गुरू) की खोज कर के उन से गुरू दीक्षा लेनी अनिवार्य है अन्यथा कार्य सिद्धि अस्म्भव है। यदि आप ने (शब्द गुरु) श्री गुरू ग्रंथ साहब जी को गुरु धारण किया है अर्थात पांच प्यारों से अमृत धारण किया है तो केवल ग्रंथ साहिब को मस्तिष्क झुका कर कुछ होने वाला नहीं जब तक आप आदि से अंत तक कम से कम एक बार गुरु वाणी का स्वयं अध्ययन न कर ले, क्यों कि यह वही सविधान है जिसने हमें जीवन युक्ति प्रदान करनी है। आजकल शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा प्रकाशित चार शब्दार्थ उपलब्ध (Four Volume) हैं जिन की भेटा (मूल्य) बहुत ही कम है यह प्रत्येक ऐतिहासिक गुरुद्वारे में उनके स्टालों पर सहज में उपलब्ध है। इस के साथ आचार सहिंता (रहित मर्यादा) भी बिना दाम तीन भाषाओं में दी जाती है।

3. जिस जीवात्मा ने गुरूवाणी का स्वयं अध्ययन कर लिया हो उसे कुछ और बताने की आवश्यकता ही नहीं है परन्तु फिर भी जो भी विद्धानों ने समय - 2 बताया हैं वह यहीं है कि स्वयं को निरेच्छा कर लो अर्थात किसी भी वस्तु की अभिलाषा मन में न रखों। यदि मन में कोई कामना रह गई तो पुनर जन्म निश्चित ही है। केवल एक ही इच्छा होनी चाहिए -

तिआगना तिआगनु नीका, कामु, क्रोधु, लोभु तिआगना।।

मांगना मांगनु नीका, हरि जसु गुर ते मांगना।।

मरू महला 5, पृष्ठ - 1018

हमें चिंतन - मनन करने से सर्व प्रथम यह जान लेना अति आवश्यक है कि प्रभु की क्या परिभाषा है भावार्थ हम किसे आराधे यदि हमने उस दिव्य ज्योति को न भज कर किसी अन्य शक्ति की उपासना की जो उस परमपिता द्वारा उत्पन किया गया है तो हमारा जप - तप वास्तविक लक्ष्य से चूक जाएगा और प्राप्ति न के बराबर होगी। प्रकृति का सिद्धांत है जिस को भजोंगे उसी का रूप हो जाओंगे अत: हमें सदैव ध्यान रखना चाहिए कि हमें सदैव उस करते को भजना है, कृतियम को नहीं। सभी देवी - देवते उस करते की उत्पत्ती ही है। उन का भी हमारे जैसा जन्म, मरण है। अत: गुरू वाक्य है -

एको सिमरो नानका जो जलि थलि रहीआ समाय।।

दूजा काहे सिमरीऐ जो जमै ते मरि जाय।। (जन्म सारवी)

यदि हम सर्व शक्तिमान, सर्वव्यापक पिता परमेश्वर की आराधना करते है तो हम भी उस के अनुसार निरभय तथा निर वैर - सम दुष्टि हो जायेगे।

निरभउ जपै सगल भउ मिटै।। प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै।।

(गउड़ी सुखमनी महला 5, पृष्ठ 293)

इस से पहले कोई अन्य विचार करे सर्वप्रथम गुरुदेव जी द्वारा श्री गुरू ग्रंथ साहब में मंगला चरण रूप में प्रस्तुत मूल मंत्र जिसे दिव्य ज्योति की परिभाषा माना गया है का अध्ययन करते है।

एक ओअंकार (ੴ)[1], सति[2] नामु[3], करता[4], पुरखु[5], निरभउ[6], निववरु[7], अकाल[8], मूरति[9], अजूनी[10], सैभं[11], गुरु प्रसादि[12]।।

1. एक अव्यक्त एवं व्यक्त परमात्मा 2. पारमार्थिक सत्ता 3. नाम – स्वरूप 4. रचयिता 5. पुरुष सर्वात्मा। 6. निर्भय 7. बैर – रहित 8. समय और मृत्यु के प्रभाव से स्वतन्त्र 9. स्वरूप – अकाल मूरति का अर्थ है भर्वनाशक काल के प्रभाव से स्वतन्त्र है। 10. अयोतिज, जन्म – मरण रहित 11. स्वयम्भू अपने आप प्रकट होने वाला 12. गुरू की कृपा द्वारा प्राप्त होने वाला।

यथा

रूप न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिन्न।।

तिसहि बुझाए नानका, जिस होवै सुप्रंसन।।

राग गाउड़ी, सुखमनी, महला 5, पृष्ठ – 283

यथा

चक्क्र चिहन अरु बरन जाति, अरु पाति नहिन जिह।।

रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह।।

अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोजि कहिज्जै।।

कोटि इंद्र इंद्राण साहु साहाणि गणिजै।।

त्रिभवन महीप सुर नर असुर नेत नेत बन त्रिण कहत।।

तव सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमत।।

जापु साहिब, श्री गुरू गोबिन्द सिंघ जी।

4. आध्यात्मिक दुनियां में माना जाता है कि जीवात्मा का प्रभु में विलेह होने में सब से बड़ी बाधा उस का अभिमान (अंहकार) ही होता है यही जीवात्मा को प्रभु से दूरी बनाये रखता है। जब तक जीवात्मा अपना अस्तिव मिटा नहीं देती तब तक दो से एक हो नहीं सकता। इस बात को समझने के लिए हम बर्फ का एक टुकड़ा लेंगे और उसे एक जाली अथवा छलनी में रखेंगे। जब तक बर्फ सम्पूर्ण रूप में पिगल न जाये तब तक वह उसके पार रखे

पानी में समा नहीं सकती। भावार्थ बर्फ को सम्पूर्ण रूप में गलना ही होगा। ठीक इसी प्रकार जीवात्मा को अपना अहंग भाव त्याग कर अपने अस्तित्व को मिट्टा ना ही पड़ता है।

नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ।।

महला 3, वार सिरीराग) पृष्ठ 89

यथा

कबीर मेरा मुझ महि किछु नहीं, जो किछु है सो तेरा।।

तेरा तुझ कउ सोप ते, किआ लागै मेरा।। पृष्ठ 1364

जब जीवात्मा अहंग भाव त्याग कर पूर्ण रूप से मन को द्रवित नहीं कर लेता, भाव लेश मात्र भी मैं – मैं वाली दूरी बनी रहेगी तब तक तूहीं – तूहीं नहीं हो सकता भावार्थ स्वयं को मिटा कर उस प्रभु में अभेद हो नहीं सकते आध्यामित्क दुनियां में शत – प्रतिशत अंक प्राप्त करने होते हैं नहीं तो पुनर जन्म निश्चित ही है। एकाकार होने का यही सिद्धांत है।

वास्तव में जीवात्मा का बड़ा शत्रु उस का अभिमान अर्थात अहंग भाव ही है। इसे समाप्त करना अस्म्भव तो नहीं परन्तु कठिन अवश्य है। इस के लिए गुरू वाक्य है: –

हंउमै वडा रोगु है मरि जंमै आवै जाय।।

जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आय।।

नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाय।।

वडहंस की वार महला 3 पृष्ठ 592

इस बात का सभी जीवात्माओं को और भी ज्ञान होना चाहिए हमें जो कुछ भी प्राप्त हुआ है अथवा होगा वह केवल प्रभु कृपा से ही होगा। हमारे प्रयास अथवा बल से कुछ मिलने वाला नहीं। उस परम पिता परमेश्वर के दरबार में निरबल को ही स्वीकारा जाता है।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी के विधान अनुसार प्रत्येक प्राणी उस ईश्वरीय शक्ति से कोई भी रिश्ता – नाता बना सकता है जैसे – गुरू वाक्य है –

तूं मेरा पिता तूहै मेरा माता ।। तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ।।

तूं मेरा राखा सभनी थाई तां भउ केहा काड़ा जीउ ।। 2।।

राग माझ, महला 5 पृष्ठ 103

हमारा पिता परमेश्वर बहुत दयालु है वह अपने पुत्रों पर कृपा दृष्टि सदैव करता रहता है अर्थात वह 'बख्शिनंद' पिता है। यदि हमारी प्रार्थना हृदय से हो कि मेरे अवगुणों को क्षमा करें तो वह तुरन्त अपने बेटों को जो स्वयं को समर्पित करते हैं क्षमा प्रदान करता है अर्थात बख्श लेता है। यही उस का बिरद है। इस में किसी को शंका नहीं होनी चाहिए।

दूख दरद बिनसे भै भरम ।। आवण जाण रखे करि करम।।

गउड़ी महला 5, पृष्ठ 183

यथा

नानक राखि लेहु आपन करि करम ।।

तिलंग महला 5, पृष्ठ 724

यथा

रहम तेरी सुखु पाइआ, सदा नानक की अरदासि।।

राम कली महला 5, पृष्ठ 893

भारत के प्राचीन ऋषि-मुनि इस तथ्य को जानते थे कि प्रभु मिलन में सब से बड़ी बाधा व्यक्ति का अभिमान ही है और दूसरी बाधा व्यक्ति की कामनाएं हैं। उन्होंने इन दोनों बाधाओं से छुटकारा प्राप्त करने के लिए अपनी सीमित बुद्धि द्वारा एक उपाय निकाल लिया कि यदि हम गृहस्थ त्याग कर संन्यास ले ले तो यह दोनों बाधाएं पार कर के प्रभु में अभेद हो सकते है।

सर्व प्रथम संन्यासियों के गुरू गोरख नाथ ने अपने शिष्यों को भीख मांगना सिखाया। उस का विचार था कि भिक्षा माँगने से व्यक्ति के अभिमान को भारी ठेस लगती है अत: उस का अहंग भाव चकना चूर होकर समाप्त हो जाता है। उसने यहां तक अपने शिष्यों को विवश किया कि वह सर्वप्रथम अपने ही घर से भिक्षा पात्र में अलख निरंजन की गूंज करते हए माँगे। इन बातों से अहंग भाव को तो क्या ठेस लगनी थी। इस के विपरीत भिक्षा मांगने वाले शिष्यों को स्वाभिमान को ठेस लगी वे लोग, बे-गैरत और बे-अणखे हो गये। जहां तक कामनाओं को समाप्त करना था वह हो न सकी क्यों कि जीवन जीने के लिए भोजन, वस्त्र और सिर पर छत तो चाहिए ही। इन वस्तुओं की कमी या अभाव सभी सन्यासियों को विचलित करता रहता और वे लोग प्रत्येक क्षण इन वस्तुओं के अभाव के कारण कई कामनाएं और इच्छाओं के गुलाम हो गये।

श्री गुरू नानक देव जी ने जब गोरख नाथ के शिष्यों में सद् गुणों का अभाव देखा तो वह कह उठे तुम लोग लगभग सभी पाखण्डी हो केवल गृहस्थ आश्रम की ज़िम्मेवारियों से बचने के लिए नखटू और निठले बनकर गृहस्थी लोगों पर अश्रीत बन कर जीवन व्यतीत करते हो।

जब कोई गृहस्थी दान में तुम्हें कुछ देगा तो वह भी तो कामना करता ही है कि तुम उसको अपने जप-तप से अशीष दो यदि तुम सच्चे संन्यासी हो तो भीक्षा के बदले तुम्हें उसे आशीष देनी ही होगी। जिस से वह तुम्हारे जप-तप के फल का भागीदार बन गया और वह एक रोटी या कपड़े के बदले तुम्हारा जप-तप सहज में ही ले गया। जिस से तुम उस फल से वनचित हो गये। अब बताओं कि तुम्हारें सन्यासी बनने का क्या लाभ हुआ।

श्री गुरू नानक देव जी ने इन पारवण्डी सन्यासियो के गुटों को कंद-मूल फल तथा 'धूनी' के लिए ईधन की लकड़ियों के लिए आपस में लड़ते हुए देखा था।

3. मानव को प्रकृति द्वारा 'काम' उपहार स्वरूप में दिया गया है जिस से सृष्टि की उत्पनी बनी रहे। यदि मनुष्य हठयोग से प्रकृति के नियमों के विरुध कार्य करे तो वह प्रकृति के नियमों को भंग करने का अपराधी भी होता है। किन्तु प्रकृति के नियमों में बल होता है अत: अधिकांश संन्यासी,-संन्यास धर्म से विचलित होते देखे जाते हैं और वह समाज में बदफैली (यौन शोषण) करते पाये जाते रहे हैं। अत: 'ये लोग न घर के हैं न घाट के' यह सब देख कर गुरूदेव कह उठे-

जोग न खिंथा जोग न डंडै, जोग न भसम चड़ाइऐ।।

जोग न मुंदी मूंडि मुडाइऐ, जोग न सिंङी वाईऐ।।

अंजन महि निरंजनि रहीऐ, जोग जुगति इव पाईऐ।।

गली जोगु न होय।।

एक द्रिसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई।।

महला 1 पृष्ठ 730

इस लिए गुरुदेव ने अपने शिष्यों को गृहस्थी होना अनिवार्य कर दिया उन के मुख्य तीन सिद्धात थे-किरत करो, नाम जपो और वंड छको अर्थात परिश्रम करो, प्रभु चिन्तन मनन करो, मिल-बाँट कर सेवन करो।

गुरुदेव जी के हृदय में मानवता के लिए अपार स्नेह था। अत: उनके सिद्धांत, जाति-पाति, रंग, नस्ल, हिन्दू, मुस्लिम, लिंग-भेद ऊँच-नीच देश-काल, अमीर-गरीब, मालिक नौकर इत्यादि के मतभेद से ऊपर थे। वे तो समस्त मानव जाति को आत्म निर्भर एवं स्वतन्त्र देखना चाहते थे।

गुरुदेव जी जब प्रचार दोरों पर थे तो उनके बड़े बेटे ने सिद्ध-योगियों की संगत के कारण सन्यास ले लिया और प्रतिज्ञा कर ली कि मैं सदैव यती रहूंगा गुरुदेव जी के वापस लोटने पर इस बात का जब उन्हें पता चला तो पिता-पुत्र में सिद्धांतिक मत भेद हो गया। जिस कारण गुरुदेव ने बड़े बेटे श्री चंद को हृदय से निष्कासित कर दिया। तब समस्त मानव समाज को उन्होंने एक विशेष उपदेश दिया।

नानक सतिगुरि भेटीए पुरी होवे जुगाति।।

हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति।।

गुजरी महला 5, पृष्ठ 522

यथा

सचि सिमरिऐ होवै परगासु ।। ता तो बिखिआ महि रहै उदासु ।।

सतिगुर की ऐसी वडिआई ।। पुत्र कलत्र विचे गति पाई ।।

राग धनासरी, पृष्ठ 661 (ग्रंथ साहिब)

श्री गुरु नानक देव जी ने अभिमान (अहंग) प्रवृति के दमन के लिए अपने शिष्यों (सिक्खों) को एक विशेष युक्ति प्रदान की। उन्होंने कहा समस्त दीन-हीन (दुखी) समाज की बिना भेद भाव, हृदय से सेवा करने से मन में नम्रता स्वयं की उत्पन हो जाती है तथा सदैव सत् संगत में आते रहना चाहिए यहाँ आकर, लँगर के जूठे-बर्तन साफ करना, झाड़ू लगाना, जूते साफ करना तथा शौचालय स्वच्छ करने मात्र से मन की मैल धुल जाती है और अहंग भाव का नाशा उत्तर जाता है और मनुष्य में हीन भावना न उत्पन होकर, उसमें स्वाभिमान (अड़ख-गौरत) बनी रहती है। इस प्रकार व्यक्ति जीवन चरित्र से संत और कर्त्तव्य से सिपाही बना रहता है।

मन की कामनाओं अथवा इच्छाओं को गुरुदेव ने दमन करने का कोई प्रावधान नहीं बनाया। उन्होंने केवल आचारण को उज्जव रखने की बात कही है। जो कि गृहस्थ में रहकर सहज में हो सकती है। गुरुदेव का कथन है गृहस्थ के सभी सुख भागों परन्तु वही कार्य करो जिस से मन में विकार उत्पन न हो। गृहस्थ में रहते हुई निरलेप रहे जैसे-मुगाई पानी में रहते हुए भी नहीं भीगती अथवा कमल का फूल पानी में रहते हुए भी पानी से निरलेप रहता है वह पानी में नहीं डूबता इत्यादि।।

जैसे जल महि कमलु निरालमु, मुरगाई नैसाणे।।

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नाम, वखाणे।।

राम कली सिध गोसटि पृष्ठ-938

यथा

साचि नामि मेरा मन लागा।। लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ।।

आसा महला 5, पृष्ठ-384

आप प्रश्न यही है कि गुरू ग्रंथ साहिब किस क्रिया के करना को कहते है जिस से जीवात्मा सहज-सरल विधि से मोक्ष प्राप्त कर सकता हो।

उत्तर ▬ ▬ ▬ ▬ ▬

एहु अहेरा कीनो दानु।। नानक कै घरि केवल नामु।।

भैरउ महला 5, पृष्ठ 1136

यथा

सिम्रिति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ।।

नाम बिना सभि कूड़ु गाहली होछीआ ।।

सूही महला 5, पृष्ठ 761

यथा

कहि रविदास जो जपै नामु।।

तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ।।

राग बसंत, रविदास पृष्ठ 1196

श्री गुरू ग्रंथ साहिब की वाणी में भगत नाम देव जी ने प्राचीन काल से सम्बन्धित उदाहरण प्रस्तुत किये है परन्तु आज हम आप को आधुनिक युग के प्रत्क्षय प्रमाण दे कर इस बात को सिद्ध करेगें कि एक समय में दो कार्य करते हुए जन-साधारण को पाया जाता है- मान लो आप एक बस में यात्रा कर रहे है तो आप ने अकसर देखा होगा।

जब कन्डेक्टर फुर्सत में होता है तब वह ड्राईवर से बाते करता रहता है। इन सभी बातों का ड्राईवर भी बहुत उचित उत्तर देता है, इस प्रकार उन दोनों का विचार-विमर्श लगातार कई घंटो चलता रहता इस बीच ड्राईवर गाड़ी को गतव्य स्थल पर पहुँचा देता है। तात्पर्य यह कि एक ही समय में ड्राईवर दो कार्य कर रहा था? पहला सावधानी से गाड़ी ड्राईव कर रहा था तथा अपने साथी के साथ उचित वार्ता इत्यादि।

गुरू घर में श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी द्वारा दिया गया गुरू मन्त्र रूप में 'वाहिगुरू' शब्द को गुरु मन्त्र के रूप में स्वीकारा गया है जिस मन्त्र को पांच प्यारे गुरू दीक्षा समय अमृत अभिलाषी को देते है।

सर्व प्रथम यह मंत्र प्रात: काल सूर्य उदय होने से पूर्व एकागर बैठकर मुँह से उँच्चे स्वर में भजना है और उसी को स्वयं ही श्रवण करना होता है जब उस गूंज की धुनि हृदय अथवा नाभि से टकराती है तब जिज्ञासु को सहज-सहज आनंद का एहसास होने लगता है। फिर-समय के साथ-साथ यह कर्म निताप्रति हर-समय प्रारम्भ हो जाता है तद्पश्चात अभ्यासी को श्वास-श्वास जपने की आदत हो जाती है जिसे आध्यात्मिक दुनियां में अजपा-जापा कहते हैं-इस कार्य का अन्य व्यक्तियों को एहसास भी नहीं हो पाता कि कोई भजन कर रहा है।

उठत बैठत सोवत जागत इह मन तुझे चितारे।।

सुख दूख इसु मन की बिरथा तुझही आगै सारे।। पृष्ठ 820

यथा

उठत बैठत सोवत धिआईऐ ।। मारग चलत हरे हरि गाईऐ ।।

आसा महला 5, पृष्ठ 386

महापुरुषों का जीवन वृत्तांत जन साधारण के लिए आर्दश होता है तथा उन की वाणि समस्त जगद् का मार्ग दर्शन करती है। यदि कोई मनुष्य इन दोनों जीवन युक्ति तथा विचार धाराओं का अध्ययन करता है एवं उसी अनुसार जीवन व्यापन करता है तो उस के कल्याण के लिए गुरुदेव वचन (Guarantee) भी देते है कि उस मानव को पुन: माता के गरभ में नहीं आना पड़ेगां।

गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ, से फिरि गरभास न परिआ रे ।।

पृष्ठ 612

जिज्ञासु तो भजन करता है कुछ प्राप्ति के लिए यदि वह केवल प्रेम वश मनन करे तो निष्काम भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए गुरूदेव जी कहते है।

जब लगु मनि बैकुंठ की आस ।। तब लगु होय नही चरन निवासु ।।

समीक्षा

इस वैज्ञानिक युग में कुछ एक बातों को समझने में विज्ञान द्वारा तैयार यन्त्रों ने बहुत सहायता की है उदाहरण के लिए: – मोबाईल फोन, अगर हम चाहे तो उसी क्षण हमारी लोकेशन पुआईट आउट कर सकता है। इस का अर्थ यह हुआ कि हम फोन कम्पनी की प्रत्येक क्षण दृष्टि में है – ठीक ऐसे ही हम प्रत्येक क्षण प्रभु की दृष्टि में है।

इस प्रकार वी.डी.ओ. गेमस खेलने वाले दोनों खिलाड़ी यह जानते हैं कि वे लोग केवल स्कोर बनाने के लिए स्वतन्त्र है परन्तु गेम पर उन का कोई नियन्त्रण नहीं। ठीक इस प्रकार हम मात लोक में कर्मो के लिए स्वतन्त्र हैं परन्तु वातावरण प्रदान करना उस प्रभु की ही देन है। जिस पर उस प्रभु का नियन्त्रण है – जैसे हम अपने मोबाईल फोन पर किसी भी व्यक्ति का नम्बर डाईल कर के उस से बात कर सकते है – ठीक इस प्रकार आप अपने हृदय

के फोन में प्रभु का नम्बर डाईल कर के उस से कभी भी बात कर सकते हैं। अब आप पूछेगे कि उस दिव्य ज्योति का नम्बर क्या है तो उस का उत्तर है, जैसे आप अपने प्रदेश से बाहर बात करते हैं तो सर्व प्रथम शून्य (0) डाईल करते हैं। अगर विदेशों में फोन करना हो तो दो शुन्य लगाने पड़ते हैं - अगर आपको ब्रह्मड़ के मालिक से बात करनी है तो तीन शून्य डाईल करने ही होंगे।

1. पहला शून्य स्वयं को निरेच्छा कर लो अर्थात अपनी कमनाएँ शून्य पर ले आये।

2. दूसरा शून्य है अपने अभिमान (अहंग) भाव को शून्य पर लाये अर्थात अपने अस्तित्व को मिटा डाले।

3. तीसरा शून्य है, स्वयं को प्रभु चरणों से समर्पित करने के लिए क्षामा याचना में व्यस्त रहना सीख लो।

यदि कोई मानव यह तीनों शुन्य अपने हृदय के फोन पर डायल कर लेता है। तो वह मानव इसी जीवन में मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त कहलाता है अर्थात वह इसी शरीर में इसी समाज में रहते हुए आवागमन के चक्रव्युह से सदैव के लिए छुटकारा प्राप्त मनुष्य होता है। वह पुन: माता के गरभ में नहीं आता। यह सिद्धांत श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का है। इस बात की गुरुदेव बार - बार पुष्टी करते है।

ਲੇਖਕ: ਜਸਬੀਰ ਸਿੰਘ
Ph. : (0172-2696891),
09988160484

Type Setting :
Radheshyam Choudhary
Mob. : 098149- 66882

निम्नलिखित वेबसाइट में दस गुरूजनों का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत विस्तृत रूप में अवश्य देखें तथा पढ़ें।

www.sikhworld.info
or
www.sikhhistory.in

E-mail : info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

ਉਪਰੋਕਤ ਵੈਬ ਸਾਇਟ ਵਿੱਚ ਦਸ ਗੁਰੂਸਾਹਿਬਾਂ ਦਾ ਸੰਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਬਿਊਰਾ ਵਿਸਤਾਰ ਸਹਿਤ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਖੋ ਅਤੇ ਪੜੋ ਜੀ।

ਇਸ ਵੈਬ ਸਾਈਟ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ

ਇਸ ਵਿਚ ਹੈ ਇਸ ਵਿਸਾਲ ਸਿੱਖ ਸੰਗ੍ਰਹਾਲਯ (Museum)

ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਵ੍ਰਿਤਾਤਾਂ ਨਾਲ ਸਮਬੰਦਿਤ ਘਟਨਾ ਕਰਮ ਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਤੋਂ ਲੈਕੇ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਗੋਬਿੰਦ ਸਿੰਘ ਜੀ ਦੇ ਜੀਵਨ ਤਕ ਕਾਲਪਨਿਕ ਤਸਵੀਰਾਂ ਜੋ ਇਤਿਹਾਸ ਦ੍ਰਸਾਂਆਉਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਹੇਠ ਹਨ ਹਿੰਦੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਵਿਚ ਟਿਪਣੀਆਂ (ਫੁਟਨੋਟ) ਜੋਕਿ ਘਟਨਾਂ ਕਰਮ ਅਤੇ ਇਤਿਹਾਸਿਕ ਪਰਸੰਗਾਂ ਦਾ ਵਰਣਨ ਕਰਿਦਿਆਂ ਹਨ।

ਨੋਟ :- ਇਹ ਕਮ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਰੁਚੀ ਨੂੰ ਮੁਖ ਰਖਦੇ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ। ਤਾਕਿ ਉਹ ਸਹਿਜੇ ਹੀ ਅਪਣਾ ਇਤਿਹਾਸ ਜਾਣ ਸਕਣ। ਮੈਂਨੂੰ ਉਮਿਦ ਹੈ ਕਿ ਸਿੱਖ ਜਗਤ ਦੇ ਕਿਸ਼ੋਰ ਅਤੇ ਯੁਵਕ ਇਸ ਵਿਧਿ ਤੋਂ ਲਾਭ ਉਠਾਉਣਗੇ। ਕਿਉਂਕਿ ਇਸ ਵਿਧਿ ਵਿਚ ਅੱਧੀ ਗਲ ਤਸਵੀਰਾਂ ਕਹਿੰਦੀਆਂ ਹਨ ਅਤੇ ਅੱਧੀ ਗਲ ਫੁਟ ਨੋਟ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪਠਕਾਂ ਦੇ ਮਨ ਵਿਚ ਅਪਣੇ ਇਤਿਹਾਸ ਨੂੰ ਪੜਨ ਲਈ ਇੱਛਾ ਜਾਗਰਿਤ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਹੁਣ ਤੁਸੀ ਇਸ ਤੋਂ ਅਗੇ ਸਤਾਰਵੀਂ, ਅਠਾਹਰਵੀਂ ਅਤੇ ਉਨੰਵੀਂ ਸੱਦੀ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀਆਂ ਤਸਵੀਰਾਂ ਫੁਟ ਨੋਟ ਸਹਿਤ ਵੇਖੋਗੇ। ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਹੀ ਸਿੱਖ ਮਾਹਾਪੁਰਖਾਂ ਦੇ ਚਿਤਰ ਅਤੇ ਬੁਧੀ ਜੀਵੀਆਂ ਦੇ ਚਿੱਤਰ ਅਤੇ ਟਿਪੜਿਆਂ ਪੜ੍ਹ ਸਕੋਗੇ।

ਕ੍ਰਿਪਾ ਕਰਕੇ ਆਪ ਜੀ ਸਿੱਖ ਮਿਅਉਜਿਯਮ ਤੇ ਜ਼ਰੁਰੀ ਕਿਲੀਕ ਕਰੋਜੀ।

1. ਜੇਕਰ ਕੋਈ ਇਸ ਨੂੰ ਦੁਬਾਰਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕਰਵਾਣਾ ਚਾਹੇ ਤਾਂ ਉਹ ਇਸ ਨੂੰ ਮੁਫ਼ਤ ਵੰਡ ਸਕਦਾ ਹੈ।
2. यदि कोई इसे पुनः प्रकाशित करवाना चाहे तो वह निःशुल्क बटवा सकता है।